देश के निमाण में युवाओं का योगदान

डॉ. एम. डी. थॉमस

समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा युवाओं का है। बावजूद इसके, समाज को चलाने मं युवाओं की सहभागिता बहुत ही कम है। आजकल, कतिपय राजनीतिक दलों की युवा-शाखाएं बनी हुइ हैं। कइ समुदायों मं भी युवा संगठनों का सक्रि य रूप देखने को मिलता है। फिर भी, युवाओं के नयेपन का सकारात्मक असर सामाजिक जीवन पर हो, समाज के कानून और नीतियों पर हो तथा नेता-प्रशासकों पर हो, इसके लिए, मुझे लगता है, इन्तज़ार की घड़ी अब खतम नहीं हुइ है।

जहाँ भी देश के निमाण की चचा होती है, हिन्दी साहित्य के मशहूर सन्त कवि दादूदयाल की दो पंक्तियाँ कतइ नहीं भुलायी जा सकती हैं — *'दादू परन ब्रह्म बिचारिए, तव सकल आत्मा एक। काया का गुण देखए, तव नाना बरन अनेक।*. मतलब है, शरीर के स्तर पर अनेकता है और आत्मा के स्तर पर एकता है। एक पहलू पर ध्यान केन्दित करने से बिखराव आता है और सम्पण पर विचार किये जाने से आत्माएं आपस मं जुड़ जाती ह। इसलिए शरीर के स्तर से ऊपर उठकर आत्मा के स्तर पर सोचना चाहिए। भारत देश की, बस यही कहानी है। 'विविधताओं के संगम मं एकता है। एकता मं विविधताओं की समद्धि भी है'।

भारत देश अपनी विविधताओं के लिए सम्ची दुनिया मं एक खास जगह रखता है। वास्तव मं भारत एक देश न होकर अनेक देशों का एक विशाल समह है। भौगोलिक खूबसूरती की तरह-तरह की परिभाषाएं यहाँ मिलती हैं। जातियों, प्रजातियों और जनजातियों की बशुमार भिाताएं भी है। राष्ट्रभाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के साथ-साथ पन्दह राष्ट्रीय स्तर पर अंगीकार-प्राप्त प्रादेशिक भाषाएं और हजारों जन-बोलियाँ भारत की खूबो है। दुनिया की सभी बड़ी-बड़ी मज़हबी परम्पराएं भारत मं मौजूद हैं। भारत की बड़ी और छोटी विचारधाराओं के साथ-साथ विश्व की करीब सभी विचारधाराएं भारत मं मौज़ूद हैं ।

भारत की हिन्दुस्तानी और कर्नाटकीय संगीत-पद्धतियाँ बहुत ही अनुभवात्मक और मोक्षदायिनी हैं। शास्त्रीय नृत्य की सातों परम्पराएं और लोकनृत्य की सैकड़ों परम्पराएं 'एक से बढ़कर एक अच्छी' के तौर पर मनमोहक हैं। साहित्य की विविध विधाएं हों, वेश-भूषा के रंग-बिरंगे तौर-तरीके हों, खान-पान के बशुमार पकवान हों या सामाजिक रीति-रिवाज़ के भिन्न-भिन्न अंदाज़ — ये सब भारतीय समाज की विविधताओं के अलग-अलग आयाम हैं। भारत की एक सँस्कृति न होकर भारत मं अनेक संस्कृतियाँ साथ-साथ रहती-बढ़ती हैं। उपयुक्त सभी विविधताएं भारत देश की सामाजिक धरोहर हैं। इन विविधताओं को एक सूत्र मं पिरोने वाली चीज़ है एकता का भाव। भारत बशुमार मामलों मं अनेक होकर भी एक है, एक होकर भी अनेक है। 'वसुधैवकुटुम्बकम्' का सारतत्व, बस एसी पारिवारिक भावना है। एसी अनोखी विशेषता वाले देश का नागरिक होने की खुशकिस्मती पाकर हमं अपने आप पर नाज़ होना चाहिए।

राष्ट्र के रूप मं भारत की इमारत भारत के संविधान की नींव पर खड़ी है। विश्व के समस्त संविधानों मं भारत के संविधान की अपनी पहचान है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र के लायक होना ही इस संविधान का अनूठापन है। पंथरिपक्षता इस संविधान की जान और शान है। यही दृष्टिकोण लोकतन्त्र की बुनियाद भी है। इसके मुताबिक भारत देश जितना रामभक्त का है, ठीक उतना ईसाभक्त का भी है। वह जितना जैन का है, ठीक उतना मुसलमान और पारसी का भी है। भारत की सभी प्रजातियाँ और भाषाएं देश के लिए समान महत्व की हैं। नागरिक के रूप मं ब्राह्मण और शूद, पढ़े-लिखे और अनपढ़ और अमोर और गरीब के समान हक और फर्ज़ हैं। कानून के सामने सब बराबर हैं। भारत देश किसी एक समुदाय विशेष की बपौती नहीं है। लोकतन्त्र के मुताबिक हर शख्स, वर्ग और समुदाय की अपनी-अपनी जगह है। सब मिलकर भारत देश बनता है। भारत के संविधान के कारण

भारत की संस्कृति एक मिली-जुली संस्कृति साबित होती है। इसलिए पंथनिरपक्षता के नज़रिये के मुताबिक सोचना और बताव करना भारत के हर नागरिक का फ़र्ज बनता है।

लेकिन, भारत देश का धुआँदार पहलू इतना तेज़ है कि उससे रूबरू होकर कोइ भी नागरिक खौफ़ से भरे बिना नहीं रह सकता। कुछ लोग अभो भी अपने आपको ऊँची जाति के और दूसरों को नीची जाति के समझकर छुआछूत का भाव पालते हैं। कहीं दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार हो रहा है, कहीं जनजातियों और आदिवासियों के साथ बइन्साफी की जा रही है। कुछ लोग दकियानूसी सोच से गस्त होकर मज़हब और साम्प्रदायिकता के गुलाम बनकर जी रहे हैं। कुछ कट्टरवादी लोग दूसरे समुदायों के लोगों को पराये कहकर उनके साथ हत्या-बलात्कार आदि की धिनोनी गुनाह करते रहते हैं। कोइ मज़हब के नाम पर राजनीति करते हैं और कानून के साथ खिलवाड़ करके भी दूसरों को किनारा करने की कोशिश करते हैं। कुछ लोग 'धमान्तरण', 'घर-वापसी' और 'बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक' की बतुक नारों को लेकर सत्ता हथियाने का धंधा करते हैं। कुछ लोग 'हिन्दुत्व' आदि की ब-सिर-पर की विचारधाराएं गढ़कर भारतीयता का ठेका लिए हुए हैं और संविधान के साथ भारी जुल्म करते हैं। कोइ जीने-बढ़ने के संघष में लगे हैं, तो कोई दूसरों पर अपनी ताकत जमाने की नाजायज़ हौड़ में लगे हैं। ज़्यादातर राजनेता पसे या मट्ठी की ताकत से सत्ता पर कांबिज होकर देश के पहरेदार बने हुए हैं और भ्रष्ट तरीकों से अपनी-अपनी मंजिल पहुँचने में लगे हैं। कइ धर्म-नेता 'सिर्प में और मरी' के खुदगर्जी-भरे आदर्श के जाल में फँसकर अपना निजी स्वग बनाने में व्यस्त हैं।

एक मशहूर और जबरदस्त शायर हैं, जिनको मं करीब से जानता हूँ। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का हवाला देते हुए अमोर और गरीब का रेखाचित्र खींचा है, जो कि गौरतलब है। उन्हीं के लफ्ज़ों में, ''सम्पन्ना और विपन्नता तो सचमुच भाग्य-रेखाओं का चक्कर ही लगता है। वयोंकि मं स्पष्ट देख रहा हूँ, जिनके पास कुछ नहीं है वे बहुत बड़े बन गये हैं और जिनके पास बहुत कुछ है वे अकिंचन-से बने हैं।'' उच्च वगं के लोग ज़्यादा धन-दौलत के कारण बुरी तरह से बोमार हो गये हैं, जबकि निम्न वगं के लोग अपने पास कुछ नहीं होने या जरूरत से कम होने से बतहाशा परेशान हैं। जीन-बढ़ने के जीतोड़ संघषों की मार-काट प्रतियोगिता तलवार के धार पर चल रही है। मूल्य-व्यवस्था हार गयी है, एसा लगता है। धर्म के आचायगण मन्दिर-मस्जिद के ताकत-परीक्षाण में लगे हैं और आम लोग अंधविश्वास की अघाता खाई में फँसे हुए हैं। प्रशासन बड़ो मात्रा में गैर-इन्तज़ामो और निष्क्रियता की हालत में है। देश की असली हकीकत जब गाँवों की जनता से जुड़ी है, नेता-अभिनेता शहरीय धुन पर ही देश को समझने-चलाने पर तुले हैं। बड़े-बढ़े लोग आखिरी साँस तक अपने परिवार, संस्था, समुदाय और देश को अपनी मट्ठी में बाँधे रखकर उसका फायदा भोगने की कोशिश में है और युवा पोढ़ी को साथ लेकर उसे नेतृत्व के गुणों से सक्षम बनाने में कम दिलचस्पो लेते हैं। एसे उल्टे-पुल्टे हालात में बशुमार सवाल उठते हैं, जिनका जवाब देना भी किसी भी शरीफ़ नागरिक के लिए, एक बड़ी चुनौती से कम नहीं है।

जग-ज़ाहिर चिन्तक बनाड शा का कहना है — 'यदि तुम वास्तव में कुछ करना चाहते हो, तो तुम्हारा कोइ धर्म होना चाहिए'। उनका मतलब यह कतइ नहीं कि आप धार्मिक परंपराओं तथा साधनाओं से होकर गुजरें। उनका मतलब है — 'धर्म प्ररणा देनेवाला तत्व है'। मरा धर्म मुझासे यह बात कहलवाता है। मरा धर्म मुझसे यह काम करवाता है । मरा धर्म ही मरी ज़िन्दगी को दिशा देता है। धर्म का यह रूप भारतीय परम्परा में मौजूद धर्म की धारणा से मल खाता है। धर्म का मूल अथ 'धारण करना' है। जो धारण करता है, वह खुद धर्म है। जिसे धारण किया जाय, वह भी धर्म है । धारण करने का मतलब है —ज़िम्मेदार लेना। हमं खुद की ज़िम्मदारी लेनी है, साथ ही, दूसरे की ज़िम्मदारी भी लेनी है। एक दूसरे की जिन्दगी को धारण करे, इसी में धर्म का असली भाव है।

जैन-दर्शन में एक बहुत ही अच्छी बात है — 'जीओ ओर जीने दो'। अपनी ज़िन्दगी खुद जीना पहला धर्म है। दूसरों को अपनी ज़िन्दगी जीने देना दूसरा धर्म भी। लेकिन मं इंसाइं नज़रिये से एक तीसरा धर्म भी जोड़ना चाहूँगा। वह है — 'जीने की मदद करो'। एक दूसरे को जीने की मदद करे, इसी में बाकायदा दूसरे की ज़िन्दगी को धारण करने का भाव निहित है। *'परहित सरिस धम्म नहिं भाइ* । दूसरे की भलाइ करने से बढ़कर कोइ धर्म नहीं है। तुलसीदास की इस बात का भी बस यही मतलब है। इंसा ने,

गुरु और प्रभु होकर भी, अपने शिष्यों के पर धोये और उन्हें एक दूसरे के पर धोने की तालीम दी। सामाजिक जीवन को सचारू रूप से जीने के लिए, आपसी लेन-देन मं रिष्ते को मजबूत बनाये रखने के लिए, विनम्र पर-सेवा के इस पाठ से बढ़कर कोइ कारगर तरीका और वया हो सकता है!

महात्मा कबोर की दो मशहूर पंक्तियाँ धर्म के सामाजिक पहलू को उजागर करने मं बहुत ही प्रासंगिक हैं। 'बहता पानी निर्मला, बन्दा गन्दा होय। साधू जन रमता भला, दाग न लागे कोय।।' धर्म और इन्सानियत पर दाग नहीं लगे, वे साप--सुथरा रहे, उसके लिए उनके विभिन्न पहलुओं को बहते पानी के समान एक दूसरे की ओर चलते रहना चाहिए। सामाजिक जीवन मं समरसता लाने का यही है गुरुमन्त्र। समाज मं मौजदू भिन्न-भिन्न मज़हबी परम्पराएं न द्वीप के समान रहें, न समान्तर रेखाओं-जैसे चलें भी। उनमं आपसी सरोकर और सहयोग की भावना रहे, यही वक्त की ज़रूरत है, तकाज़ा भी। विभिा. महाप्रुषों, धर्मगन्थों तथा धर्म-दर्शनों की बातें सबको जोड़ने लायक हैं। सांइबाबा ने 'सबका मालिक एक' कहकर ज़िन्दगी की हकीकत को निचौड़कर रखा है। श्री नारायण गुरु का मानना है — 'मज़हब हो कोइ भी, इन्सान भला सो भला'। अच्छा इन्सान बनना ज़िन्दगी का आंखरी सच है। महात्मा कबोर का आध्यात्मिक एहसास उतना ऊँचा था कि वे कह उठे — *'जित देखूँ तित तूँ*। उन्हें सब मं खुदा ही खुदा नज़र आता है। बौद्ध दशन के मताबिक 'मध्यम माग' को अपनाना ही फायदेमन्द है। जैन दशन ने 'अनेकान्तवाद' को मानकर हकीकत के बहुआयामोपन पर ज़ोर दिया है। भागवतगीता ने 'निष्काम कर्म' की बात करके जीने के अलौकिक अन्दाज़ को ज़ाहिर किया। 'मरे इन भाइयों या बहनों के लिए, वे चाहे कितना ही छोटा वयों न हों, जो कुछ किया, वह तुमने मरे लिए ही किया' — एसा कहकर इसा ने प्री आध्यात्मिकता को सह-इन्सानों के साथ किये जाने वाले व्यवहार पर घटित किया। उपनिषद् ने 'सवें भवन्तु: सुखिन:' कहकर मानो सब कुछ कह दिया हो। ये सभी बातें किसी एक समदाय विशेष का न होकर सम्ची इन्सानी समाज की आध्यात्मिक धरोहर है। इसलिए भिन्न-भिन्न परंपराओं मं पले-बढ़े इन्सानों को एक दूसरे का सम्मान करना होगा, एक दूसरे से सीखना होगा और एक दूसरे से आपसी सरोकार और सहयोग की भावना बनाये रखना होगा। यही जीने की कला है। समाज के अलग-अलग समदाय और इकाइयाँ एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े रहे, मानो वे 'एक शरीर के अनेक अंग हों', इसी मं समाज का कल्याण है। इस प्रकार समाज मं तालमल और एकता का भाव बना रहे, महात्मा कबोर व 'बहते पानी' का बस यही मतलब है।

अंग्रेज़ी साहित्य के मशहूर कवि लोंगफेलो की एक पंक्ति है — 'लेट एवरी मोरो फाइन्ड यू फारदर दैन टुडे'। मतलब है — आपका हर दिन आपको आगे बढ़े हुए पाये। आप हर दिन प्रगति करते रहें। अपनी ज़िन्दगी के सफर मं आगे बढ़ी हुइ हालत का नाम है प्रगति। प्रगतिशील रहना जीने का दूसरा नाम है। चलते रहना ही प्रगति करने का मतलब है। प्रगतिशील होना युवाओं की खास पहचान है। लेकिन, अकेले चलने से कोई भी मंज़िल तक नहीं पहुँचता। दूसरों के साथ मिलकर चलना होगा। युवाओं को समाज के बड़े-बढ़े और तजुरबकारों के साथ चलना होगा, अपने समदाय के दूसरे युवाओं के साथ चलना होगा, सभी समदायों के युवाओं के साथ चलना होगा, और खास तौर पर गाँवों मं बसे या पिछड़े हुए युवाओं के साथ चलना होगा। युवाओं को बड़ों से, खास तौर पर अपने माँ-बाप, गुरुजन, बड़े-बढ़े, तजुरबकार और महाप्रुशों से, प्ररणा और ताकत हासिल करनो होगी, जैसे बिजली से चलती रेल गाड़ी की एंजिन हर पल तार से छूती हुइ चलती है।

युवाओं का संकल्प है — देश का निमाण करना। देश का निमाण करने का मतलब है समाज का निर्माण करना। बहतर समाज का निमाण करना युवाओं की खास मंज़िल है। बड़े-बढ़ों द्वारा बनाये गये समाज से युवा लोग, हो सकता है, कई मायनों मं संतुष्ट नहीं हैं। वास्तव मं काफी बातें बदलने लायक भी होंगी। देश की खूबियों को हर संभव बढ़ाया जाना चाहिए। दश की समस्याओं का हल ढूढ़कर निकालना होगा। चुनौतियों से बचकर जीना मनासिब नहीं है । एसा जीना असल मं जीना भी नहीं है। युवाओं को बहतर समाज बनाने का काम खुद से शुरू करना होगा। बहतर इन्सान खुद बने - यही है बदलाव का पहला कदम। नैतिक पतन के इस युग मं युवाओं को मल्यों की पटरी से होकर चलना होगा। जो भी एब समाज मं पाया जाता है, उससे ऊपर उठकर चलने की हिम्मत हासिल करने मं युवाओं की कामयाबो है। युवाओं के नयेपन और जोश की यही परख होगी। युवाओं के संकल्प की दृढ़ता अपनी निजो ज़िन्दगी को, अपने परिवार को, अपने समाज को, अपने देश को, बहतर हालत मं पहुँचाने मं निहित है।

अपनी दो पंक्तियों में मैं इन बातों को समेटना चाहूँगा — *'चलते रहें, चलते रहें, इसी का नाम ज़िन्दगी। मिलकर चलें, साथ चलें, इसी में ज़िन्दादिली।'*

युवा साथियो, बेहतर समाज आप लोगों की मंज़िल है। नये देश का निर्माण करना आपका संकल्प है। इस ओर आपका सफ़र लगातार चलता रहे। आपका इरादा मज़बूत रहे। आपका आत्म-विश्वास जगा हुआ रहे। आपका दिल युवा-भाव से हमेशा तरो-ताज़ा रहे। आप लोग अपने परिवार में, अपने मज़हबी समुदाय में, भारतीय समाज में और विश्व समाज में एक नये नेतृत्व की पहल करें। कामयाबी युवा मन की पहचान है। आप सब युवा कामयाबी की बुलन्दियाँ हासिल करें, यही मेरी मंगलकामनाएं हैं। कामयाबी का यह गीत आपके संकल्प और विश्वास को दिशा देता रहे — 'होंगे कामयाब (3) एक दिन, ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन'।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS